SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

“गोपाल दास ‘नीरज’ के काव्य में प्रेम के विविध रुप”

धर्मेन्द्र कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
संजय गांधी स्नातकोत्तर महाविद्यालय
चौकिया, सुलतानपुर

किसी भी साहित्यकार या रचनाकार के मन में अभिव्यक्ति की कामना का उद्रेक होता है, और यह भाव या संवेदना उसके परिवेश और जीवन के अनुभवों से प्रेरित होती है। इसीलिए साहित्यकार के परिवेश के परिवर्तन के साथ उसके मनोभावों का भी परिवर्तन होता रहता है। जिससे उसकी काव्य चेतना में बदलाव भी परिलक्षित होता है, और इन स्थितियों से नीरज भी अछूते नही रहे। समय के साथ उनकी काव्य चेतना में परिवर्तन उनके काव्य में स्पष्ट दिखाई देता है। नीरज मूलतः प्रेम के कवि माने जाते हैं और प्रेम के विविध रुप उनके साहित्य संसार में दिखाई देते हैं। नीरज जी के विचार में प्रेम सृष्टि का एक मुख्य तत्व है। प्रेम जीवन को गति देने वाली एक महान शक्ति है। प्रेम समस्त मानवीय संबंधो में श्रेष्ठ है। वे कहते हैं कि– ‘‘ प्रेम ने आज तक किसी को गिराया नही बल्कि, सूर, तुलसी, शेली, खलील, जिब्रान, जैसी अनेक महान आत्माओं का निर्माण किया है... .... मेरे मत से सत्य की प्राप्ति के लिए प्रेम भी एक व्यक्तिगत साधना ही है, जो अंत में जाकर विश्वसाधना का रुप धारण कर लेती है। मिसाल के तौर पर सगुण भक्ति के रुप में जो अवतारवाद है, मेरी समझ में अपने मूलरुप में वह मानवतावाद या प्रेमवाद ही है।’’ 1

नीरज में विश्वप्रेम के बारे में प्रो0 कुंदनलाल उप्रेती जी लिखते है– ––गीतकारों के प्रेम का एक और पहलू सामने आता है और वह है विश्व शांति! इसका कारण है इन गीतकारों का जीवन से प्यार। यह सही है प्रेम हृदय को आर्द्र करता है, इस आर्द्रता में समस्त विश्व प्रतिबिबिंत होता है। नीरज में यह आर्द्रता अधिक मात्रा में है। प्रकृति प्रेमी कवि युद्ध की भयंकरता से दुखी है, वह सोचता है–

‘‘मै सोच रहा हूँ
अगर तीसरा युद्ध छिड़ा

इस नयी उम्र की नयी फसल का क्या होगा''? 2

नीरज के काव्य में प्रेम का स्वरुप अत्यंत विशद् है। उनका प्रेम मानव का प्रेम है उसमें मानवतावाद की बात है अपने काव्य 'संग्रह दर्द दिया है' की भूमिका में नीरज ने अपने
काव्य का विषय मनुष्य को मानते हुए लिखा है–

''मेरी मान्यता है कि साहित्य के लिए मनुष्य से बड़ा और कोई सत्य संसार में नही है और उसको पा लेने में ही उसकी सार्थकता है। जो साहित्य मनुष्य के सुख–दुःख का साझीदार नही उससे मेरा विरोध है। मै अपनी कविता द्वारा मनुष्य बनकर मनुष्य तक पहुँचना चाहता हूँ। वही मेरी यात्रा का आदि है और वही अंत।'' 3

मानव प्रेम का स्वर नीरज के काव्य में प्रारम्भ से ही सुनाई पड़ता है। प्रारम्भिक काव्यकृतियाँ 'संघर्ष नदी किनारे' जिनमें बहुत सारी छोटी छोटी कवितायें संकलित है, मैने बस चलना सीखा है, पंथी तू क्यूँ घबराता है, ''साथी सब सहना पड़ता है'', चल चल रे थके बटोही ''हाय नही अब कोई चारा 'कर्तव्य पथ' आदि कविताओं में मानवतावादी विचार दिखाई देते है। मनुष्य का महत्व बताते हुए वे मनुष्य को देवताओं से श्रेष्ठ मानते हैं–

''कब तक ठहर सकेंगे मेरे सम्मुख ये तूफान भयंकर
कब तक मुझसे लड़ पायेगा इन्द्रराज का वज्र प्रखरतर,
मानव की ही अस्थिमात्र से वज्रों ने बनना सीखा है
मैने बस चलना सीखा है।'' 4

गीतकार नीरज प्रेम को अपनी एक अनुभूति के रुप में स्वीकार करते हैं। और प्रेम की व्याख्या उन्होंने मुख्य रुप से दो स्तरों पर स्वीकार की है। एक तात्विक दृष्टि से दूसरे व्यावहारिक दृष्टि से। उनके अनुसार तात्विक दृष्टि से प्रेम का अर्थ है एक से दो होना दो से अनेक होना और फिर अनेक से एक हो जाना। इस प्रकार प्रेम द्वैत से अद्वैत की ओर जाता है व्यवहारिक दृष्टि से प्रेम का अर्थ है किसी स्वप्न, किसी प्यास, किसी आदर्श को प्राप्त करने की कामना करना। जब तक मानव में यह कामना रहेगी तब तक उसमें यह गति रहेगी, प्रेम एक भावना है जिसके साकार रुप को किसी व्यक्ति, आदर्श या वस्तु में देख सकते हैं, वह निराकार भी है और साकार भी। प्रेम ही एक मार्ग है जो हमें व्यष्टि और समष्टि से होकर इष्ट तक पहुँचाता है अर्थात् प्रेम एक प्रक्रिया है। जीवन में प्रेम से ही गति है।

वे प्रेम को एक अनिवार्य भूख के रुप में स्वीकार करते हैं। उन्होंने आध्यात्मिक धरातल पर आत्मा के एक साथी कल्पना की है और उनका कहना है कि प्रेम के माध्यम से ही हम आत्मा के उस साथी तक पहुँच सकते हैं। अंत में यह आत्मा का साथी विश्वात्मा में लीन हो जाता है और एक तादात्म्य स्थापित करता है तब जाकर इस आत्मा की मुक्ति सम्भव हो पाती है और इस सम्बन्ध में उनका विचार है–''एक बात इस सम्बन्ध में कह दूँ तो अनुपयुक्त न होगा जो व्यक्ति प्रेम को नही जानता वह केवल मैं (अहं) को ही जानता है। और केवल मैं को जानने का अर्थ है शेष सृष्टि से रागात्मक के सम्बन्ध से हीन हो जाना, किन्तु जो व्यक्ति प्रेम करता है वह मैं को समूल नष्ट तो नही करता पर, 'तुम' से सम्बन्ध स्थापित कर उसका पर्युत्थान करता है वह' मैं कहता है पर मैं कहने से पूर्व वह कहता है तुम यथा–

''गंध तुम्हारी थी मै तो बस बनकर सुमन चुरा लाया था

रुप तुम्हारा था मैने तो केवल दर्पण दिखलाया था।''

और वह इस प्रकार व्यष्टि की संकुचित सीमा से निकलकर समष्टि की ओर जाता है। '' 5

कविता कवि हृदय की अनुभूति होती है। जिसके माध्यम से कवि अपने भावों की अभिव्यक्ति करता है और पाठकों के हृदय को भी उन भावों ओतप्रोत करता है। नीरज का काव्य जीवन रस से भरा हुआ है।

उसमें उनके जीवन के विविध रंग दिखायी देते हैं। जो सिर्फ उनके ही नही बल्कि पाठकों के भी हैं। हम यदि उनके सम्पूर्ण काव्य को प्रेमानुभूति की दृष्टि से अलग—अलग भागों में विभक्त करे, तो कुछ इस प्रकार वर्गीकृत कर सकते है—

1. प्रेमानुभूति

(i) व्यष्टिपरक

(ii) समष्टिपरक

(iii) राष्ट्रप्रेम

2. सौंदर्यानुभूति

(i) नारी सौन्दर्य

(ii) प्रकृति सौन्दर्य

3. वेदनानुभूति

(i) व्यक्तिगत पीड़ा

(ii) सामाजिक पीड़ा

(iii) वेदना जीवन का सत्य है

(1) प्रेमानुभूति—आदिकाल से कवि कर्म की सम्पूर्ण साधना प्रेम एवं सौन्दर्य का विधान करती रही है। यही कारण है कि काव्य में प्रेम और सौन्दर्य की अभि प्रधान रहती है। जीवन में अत्यन्त व्यापक रुप से अन्तर्भूत होने के कारण प्रेम विविध रुपों में अभिव्यक्त होता रहा है। इस विषय पर रामेश्वर लाल खंडेलवाल जी का मानना है कि— ''दाम्पत्य प्रेम, वात्सल्य प्रेम, प्रकृति प्रेम, मानव प्रेम, देश प्रेम, श्रद्धा भक्ति सब कुछ प्रेमान्तर्गत ही है, किन्तु प्रेम का स्थायी आदर्श एवं उत्कृष्ट स्वरुप 'दाम्पत्य प्रेम' है।'' जैसा कि पहले से बताया जा चुका है कि नीरज जी कि प्रेम के सम्बन्ध में अवधारणा इसी क्रम को और विस्तार से विश्लेषित करते हुए पहले हम व्यष्टिपरक प्रेम की व्याख्या करेंगे—

1 व्यष्टिपरक प्रेमः— प्रेम जीवन की प्रबलतम प्रेरणा है इसके अनेक नाम, अनेक रुप है और अनेक प्रकार से इसका आदान—प्रदान होता है।

नीरज ने अपने काव्य में नारी को प्रेम की प्रथम किरण के रुप में माना है, लगता है सृष्टि की असुरता नारी के सारे सौहार्द, करुणा का वरदान पाकर ही दूर होती गयी।

प्रेम मानव जीवन की बड़ी आकांक्षा है। सारा ब्रह्माण्ड, जड़ चेतन, पशु–पक्षी सभी किसी न किसी प्रकार प्रेम के धागों से ही बधें हैं और प्रेम की अभिलाषा या लालसा को कवि नीरज ने इस प्रकार व्यक्त किया है

''भूल सकूँ जग की दुर्घातें उसकी स्मृति में खोकर ही

जीवन का कल्मष धो डाँलू, अपने नयनों से रोकर ही
इसीलिए तो उर–अरमानों को मैं छार किया करता हूँ
मैं क्यों प्यार किया करता हूँ।'' 7

कवि की दृष्टि में प्रणय व्यापार, प्रकृति की एक स्वाभाविक प्रवृत्ति है। पुरूष और नारी के बीच सहज सम्बन्ध ही प्रकृति का स्वरूप है। सृष्टि का आधार है। सृष्टि उन दोनों के निमित्त मांग पूरी करती है। ऐसा विचार कर नीरज ने प्रणय का रंग किस तरह चढ़ाया है वह देखने योग्य है–

''आज तो मुझसे न शरमाओं–तुम्हे मेरी कसम है
आज वर्षो बाद घायल पीर क्षणभर सो सकी है
आज बर्षो बाद गूंगी चाह मुखरित हो सकी है
आज युग के बाद मेरी रात में दो चाँद चमके
आज चुम्बन की लगी बरसात अधरों की [illegible] में
बीच में दीवार–सी फिर क्यों खड़ी सहमी शर्म है
आज तो मुझसे न शरमाओं तुम्हे मेरी कसम है।'' 8

परन्तु, वे प्रणय याचाक नही बनना चाहते। वे प्रिय की दया भी नही चाहते है। नीरज प्रेम के दोनो पक्षों में सम्मान के पक्षपाती है। प्रणय की पूर्णता दाम्पत्य में प्रस्फुटित होती है। प्रेम के प्रति अतिउच्च तल्लीनता नीरज की प्रामाणिक निष्ठा का परिचायक है। कवि नीरज की प्रेमिका के लिए प्रेम की अनुभूति और उसकी अभिव्यक्ति देखते ही बनती है। और अत्यन्त मार्मिक भी है–

'' कितना एकाकी मन जीवन
किसी पेड़ पर यदि कोई पंक्षी का जोड़ा बैठा होता
तो न उसे भी आंख भर मैं इस डर से देखा करता
कही नजर लग जाये न इनको
कितना एकाकी मन जीवन। 9

कवि नीरज यह प्रेम ही कुछ दिनो में व्यष्टि से समष्टि की ओर परिवर्तित हो जाता है और अपनी प्रेयसी के प्रणय में सारे विश्व का दर्शन करने लग जाते हैं।

2. समष्टिपरक प्रेमः– परिस्थितियाँ बदलती हैं, उसी तरह मनुष्य का मन भी बदलता रहता है। प्रारम्भ की प्रणय की कविता में जो मांसल प्रेम दिखाई देता हैं, वही प्रेम बाद की कविताओं में आध्यात्मिक स्तर पर पहुँच गया है ''तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो'' कविता में नीरज का समष्टिपरक प्रेम व्यंजित होता है–

''तुम दिवाली बनकर जग का तम दूर करो
मैं होली बनकर बिछुड़े हृदय मिलाऊँगा

सूनी है मांग निशा की चंदा उगा नही
हर द्वार पड़ा खामोश सवेरा रूठ गया
है गगन विकल, आ गया, सितारों का पतझर
तुम जाओ घर–दीपक बनकर मुस्काओ
मैं भाल भाल पर कुमकुम बन लग जाऊँगा। [10]

इस प्रकार और व्यापक स्तर पर जब हम नीरज के काव्य का विवेचन करते हैं, तो प्रेम के भिन्न–भिन्न स्वरूप दिखाई पड़ते हैं। मानवता को सबसे बड़ा धर्म मानते हुए वे कहते हैं–

''अब तो मज़हब ऐसा भी है कोई चलाया जाय,
जिसमें इंसान को इंसान बनाया जाय।

फिलहाल निष्कर्षतः यह कहना अतिशयोक्ति नही होगी कि नीरज के काव्य में प्रेम भाव का व्यापक सरस अंकन है उनका हृदय एक ओर प्रेम के मांसल उन्मादक रूप से परिपूर्ण है वहीं दूसरी ओर उनका प्रेम जगत के प्रति मंगल कामना से संयुक्त है। उनका प्रेम यूं तो व्यष्टि से शुरू होता है परन्तु कालान्तर में जैसे–जैसे परिपक्व होता है, समष्टि तक विस्तृत होता नजर आता है और एक श्रेयस्कर रूप धारण करते दिखाई पड़ता है। इसलिए कवि नीरज अपने काव्य में प्रेम के उदात्त, शक्तिवान, प्रेरक रूप को सम्प्रेषित करने में सफल नजर आते हैं।

3 राष्ट्रप्रेमः– जब गीतकार नीरज के गीतो में व्याप्त विभिन्न भावों की विवेचना करते है तो उसमें

भावों की भिन्नता भी दिखाई देती है और समय के साथ प्रौढ़ होती संवेदनाएँ भी नजर आती हैं, क्योंकि कवि एक संवेदनशील व्यक्ति होता है और उस पर बदलती स्थितियों का प्रभाव न हो ऐसा हो नही सकता। तो नीरज के गीतों में भी समय के साथ राष्ट्र की भावना प्रबल रूप में दिखाई देती है। उनके व्यक्तित्व व कृतित्व दोनो में युग प्रतिबिम्ब होता है। भारत माता जब दासता की बेड़ियो से मुक्त हुई तो नीरज मात्र 21 वर्ष कि युवा थे और उन पर अंग्रेजी सरकार की दमनकारी नीतियों का प्रभाव था, तो साथ ही आजादी के बाद के सुन्दर राष्ट्र का सपना भी था। उनके गीतों में राष्ट्रीयता की भावना या राष्ट्रप्रेम का विवेचन करने से पूर्व पृष्ठभूमि के रूप में तत्कालीन परिस्थियों का अवलोकन और मूल्यांकन जरूरी है नीरज जी ने जब गीत लिखना शुरू किया लगभग 1942 [illegible]य जब वे स्वयं गरीबी और भुखमरी से जूझ रहे थे और देश दमन चक्र के नीचे दब रहा था। छोटी उम्र में ही उनमें राष्ट्रप्रेम के अंकुर उग गये थे। नौकरी के दौरान अंग्रेजी सरकार का विरोध और कांग्रेस एवं राष्ट्रीयता का प्रचार करने के कारण उन्हे नौकरी से हाथ धोना पड़ा। वे एक स्वतंत्र व्यक्तित्व रखने वाले व्यक्ति हैं इन्ही स्वतंत्र भावनाओं और राष्ट्रीय प्रेम के कारण वे आग की तरह जीना चाहते थे और सर उठाकर पूरे सम्मान से जीना उनके जीवन का सार रहा। उनकी राष्ट्रीय भावना से भरी स्वर लहरी में इतनी शक्ति थी कि क्षेमचन्द्र सुमन जैसे कवि भी उनसे प्रभावित हुए बिना न रह सके।, उनके बारे में सुमन ने लिखा है–''1942 की क्रान्ति के बाद देश की राजनीतिक चेतना अंगड़ाई ले रही थी बंगाल के अकाल, आजाद हिन्द फौज के अफसरो पर चलने वाले मुकदमें और नाविक विद्रोह जैसी घटनाओं से देश की तरूनाई में एक अजीब जोश और अद्भत उत्साह नजर आता था, हमारे कवि भी इस परिस्थितिजन्य वैयक्तिक क्रान्ति से कैसे अछूते रह सकते थे। विभाजन से पूर्व उन दिनो देश का ऐसा कोई प्रमुख नगर नही बचा था जहा कवि सम्मेलन आयोजित न हुए हों और ऐसा

कोई कवि सम्मेलन न रहा था जहाँ नीरज को न बुलाया गया हो। 11 सुमन जी की इन बातो से नीरज जी की लोकप्रियता का अन्दाजा तो लगाया ही जा सकता है। साथ ही परिस्थितियों के प्रभाव को भी स्पष्टतः महसूस किया जा सकता है, जिसकी बानगी इन पंक्तियों में देखी जा सकती है–

''मै विद्रोही हूँ, जग में विद्रोह करने आया हूँ 12
क्रान्ति–क्रान्ति का सरल सुनहरा राग सुनाने आया हूँ''

इन पंक्तियों को सुनने के बाद जनमानस में हलचल पैदा हुई इस विद्रोहात्मक स्वर लहरी को सुनने के साथ ही सुमन जी अपने गांव न जाकर सीधे गाँधी ग्राउण्ड में आ पहुँचे और इस संदर्भ में स्वयं सुमन जी का वक्तव्य है– ''रात को लगभग 8 बजे जब मै कैनिंग लेन से दिल्ली जंक्शन लौटते हुए फव्वारे से होकर गुजरा तो मेरे कानों में मधुर स्वर लहरी से युक्त यह पंक्तियाँ पड़ी,

''मै विद्रोही................... सुनाने आया हूँ''

सुनते ही बरबस मेरे पैर रूक गये, देखा गांधी ग्राउण्ड में कवि सम्मेलन हो रहा है...........यद्यपि उन दिनों मुझपर भाषण और लेखन यहाँ तक कि श्रवण की भी पूरी पाबन्दी थी और मै अपनी नजरबन्दी के नियम का उल्लंघन करके चुपचाप दिल्ली आया था, किन्तु ज्यों–ज्यों इस कविता की पंक्तियाँ आगे चलती गयी मेरे कदम भी पंडाल कि तरफ बढ़ते गये। 13 प्रेम के इन विविध रूपों और मानव से सहज स्थापित सम्बन्ध को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि प्रेम नीरज की कविता का मूल स्वर तो रहा लेकिन प्रेम का वैयक्तिक रूप नही अपितु प्रेम को मानवता की यथार्थ की कसौटी पर कसा गया है। इस तरह से नीरज ने क्रान्ति के गीत गाये है, मानवता प्रेम के गीत गाये है, प्रेयसी को सम्बोधित गीत गाये हैं सम्पूर्ण मानवता के दुख दर्द को रेखांकित करने वाले विद्रोही गीत गाये हैं और राजनीतिक विसंगतियों को उकरने वाले गीत के साथ साथ उन्होंने समाज और राष्ट्र को जागरण का मंच देने वाले गीत गाए है। गैर राजनीतिक विसंगतियो को उकेरने वाले गीत के साथ साथ उन्होंने सामाजिक

और राजनीतिक विसंगतियों को उकेरने वाले गीत भी गाए। उन्होंने अपने गीतो के माध्यम से राष्ट्र को जागरण का मंत्र दिया उनकी दृष्टि आध्यात्मिक और सांसारिक प्रेम की ओर भी गयी है। उनके सम्पूर्ण गीत काव्य में आत्मीय सम्बोधन सदैव विद्यमान रहा है। उनके काव्य गीतो में उनकी व्यापक मानवता प्रेम का परिचय कुछ इस तरह मिलता है–

दुनिया के घाव पर मरहम जो न बने
उन गीतों का शोर मचाना पाप है।

उनकी संवेदनशीलता और प्रेम परख भावुकता का अनुमान उनकी इन पंक्तियों से लगाया जा सकता है जिसके माध्यम से उन्होने अपने जीवन को दर्शाया था–

''आंसू जब सम्मानित होंगे मुझको याद किया जायेगा
जहा प्रेम की च ी मेरा नाम लिया जायेगा
गीत जब मर जायेंगे क्या यहा रह जायेगा
एक सिसकता आंसुओ का कारवाँ रह जायेगा।''

निष्कर्षतः– यह कहा जा सकता है कि सामान्य जन के कवि नीरज अपनी सहजता, संवेदनशीलता, यथार्थ बोध और आत्मीयता के कारण महत्वपूर्ण हैं। नीरज एक सजग कवि हैं और अपनी सजगता व जागरूता के कारण इन्होनें अपनी दृष्टि को ''संघर्ष'' से ''फिर दीप जलायेगा'' तक विस्तृत किया और अपनी अनुभूतियों को एक सुदृढ़ अभिव्यक्ति प्रदान की और इन्ही सारे कारणों और अपार लोकप्रियता के चलते इन्हे भारत सरकार द्वारा पदम्श्री से भी सम्मानित किया गया।

1. नीरज– कारवां गुजर गया। पृष्ठ 57

2. प्रो0 कुन्दन लाल उप्रेती : छायावादोत्तर गीतिकाव्य–परीक्षण उपलब्धियां पृष्ठ 25 मई 1965
3. नीरज : दर्द दिया है : भूमिका आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली (1967)
4. नीरज नदी किनारे, मैने बस चलना सीखा है, पृ0–14
5. नीरज कारवां गुजर गया–पृ0–87
6. डॉ0 रामेश्वर लाल खंडेवाल : आधुनिक हिन्दी कविता में प्रेम और सौन्दर्य पृ0–124
7. नीरज, नीरज रचनावली–भाग–1, पृ0–16
8. नीजर, नीरज रचनावली–भाग–1, पृ0–211
9. वही, पृ0
10. नीरज, फिर दीप जलेगा, पृ0–115
11. क्षेमचन्द्र सुमन–आज की लोकप्रिय हिन्दी कवि नीरज–पृ0–6
12. नीरज–लहर पुकारे, पृ0–172
13. क्षेमचन्द्र सुमन–आज के लोकप्रिय कवि नीरज, पृ0–6

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/27

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

धर्मेन्द्र कुमार सिंह

For publication of research paper title

"गोपाल दास 'नीरज' के काव्य में प्रेम के विविध रुप"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com